International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 04(II), October - December, 2021, pp.201-205

माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन

शेर सिंह यादव*
डॉ. सुन्दरम्**

प्रस्तावना

शैक्षिक दृष्टि से हमारे यहाँ के विश्वविद्यालय में भारत के ही नहीं वरन् विदेशों के विद्यार्थी भी अध्ययन करते थे। नालन्दा, तक्षशिला आदि अनेक विश्वविद्यालय अपने स्तर व शिक्षा के लिए जाने जाते थे। यहाँ की संस्कृति, सभ्यता, मूल्य, आध्यात्मिक ज्ञान, नैतिकता व सामाजिकता भी विकसित थी। यहाँ के प्राचीन ग्रन्थों में जो साहित्य मिलता है, उनका आज भी कोई समकक्ष नहीं है। विश्वबन्धुत्व, समरसता, सहअस्तित्व मानव मात्र का कल्याण आदि अनेक सर्वमान्य मूल्य व नैतिकता आज की परिस्थितियों में स्वीकार्य है। उस समय के गुरूकुल शिक्षा के केन्द्र थे। उनकी व्यवस्था की जिम्मेदारी राजा व समाज की होंती थी। उन गुरुकुलों में योग्य व प्रतिभावान बालकों को शिक्षण का उत्तरदायित्व दे दिया जाता था।

विद्यालय सहभागिता एवं उपलब्धि के उन्नत स्तर की जरूरत को वैश्विक स्तर पर स्वीकृति प्राप्त है। उन व्यक्तियों को जिनको पोषित मूल्यों एवं आकांक्षाओं के साथ रखने में, विभिन्न प्रकार के शिक्षा के कार्यों एवं प्रकृति को परिवर्तित करने के प्रयासों में, विभिन्न स्तर के स्कूलों की भूमिका, इस जरूरत की पूर्ति करने में प्रतिविम्बित होती है।

भारत में, देश के सम्पूर्ण विकास में "प्राथमिक शिक्षा का सार्वत्रीकरण एवं "दिल्ली घोषणा" का "सर्वशिक्षा अभियान" के संदर्भ में संवैधानिक समर्पण के साथ बहुत ही धनात्मक कदम उठाये जा रहे हैं। उच्च स्तर की आकांक्षाओं तथा विकास के पथ पर आगे बढाने के संकल्पों के साथ इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश करने के लिए यह अतिआवश्यक है।

जब मन में किसी सूचना की संगति नहीं रह जाती तब किसी विचार की प्रासंगिकता नहीं रह जाती, तब भी कुछ संवेदनायें चेतन या अर्धचेतन में रह जाती हैं। जो हमारे स्वभाव और व्यवहार साँचे को आधारभूत रूप से प्रेरित और रंजित करती हैं। वही हमारा मूल्यार्जन होता है। अतः मूल्य व्यक्ति द्वारा अर्जित होता है। वह ज्ञानार्जन की प्रक्रिया का सार होता है या उसका तत्व होता है। इस प्रकार मूल्यों को वह भाविक संसार कह सकते हैं। जो कि नैसर्गिक क्रिया के रुप में व्यक्ति के चरित्र विकास का आधार बनता है। अतः मूल्यों की मीमांसा करने वाले बताते हैं कि "मूल्य ऐसी स्वयं सम्पूर्ण आकांक्षा या लक्ष्य है जिसकी प्राप्ति या जिसके लिए हममें संतोष उत्पन्न करता है।

बुवेकर के शब्दों में–"मूल्य वह है जो इच्छाओं की संतुष्टि तथा आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।" व्यक्ति से सम्बन्धित अनेक विशेषताओं जैसे अभिप्रेरणा, रुचि, अभिवृत्ति, लक्ष्य आदि का मापन मूल्यों द्वारा किया जाता है।

---

* शोधकर्ता, श्याम विश्वविद्यालय, दौसा, राजस्थान।
** शोध निर्देशिका, श्याम विश्वविद्यालय, दौसा, राजस्थान।

अध्ययन के उद्देश्य

- प्रशिक्षित शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन करना।
- अप्रशिक्षित शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन करना।
- प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

- प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

अध्ययन विधि

शैक्षिक शोध के अन्तर्गत वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग होता है। इसे मानक सर्वेक्षण नाम से भी पुकारा जाता है। इसका प्रमुख मुद्दा यथार्थ के विभिन्न पक्षों का विवरण देना है।

शोध उपकरण

यह अध्ययन डॉ. बीना शाह द्वारा निर्मित मूल्य मापनी के द्वारा किया गया है।

माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित अध्यापकों के मानवीय मूल्य का अध्ययन

माध्यमिक स्तर के, शोध प्रतिदर्श के अनुसार, 400 प्रशिक्षित माध्यमिक शिक्षकों के मानवीय मूल्य विषयक आधार सामग्री को आवृत्ति वितरण तालिका सं0–1 के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 1: प्रशिक्षित अध्यापकों के मानवीय मूल्य का आवृत्ति वितरण

छात्र 400

28	32	25	30	25	28	35	32	28	34	29	29	33	31	30	35	28	29	28	25
34	35	25	29	34	30	35	30	32	28	34	28	30	28	35	28	30	30	36	28
30	32	28	34	28	30	28	35	28	30	30	36	33	28	34	30	30	30	30	30
35	34	30	32	28	35	36	36	34	29	33	30	30	30	36	31	28	30	36	28
35	28	32	30	36	34	28	34	32	30	35	34	31	35	34	29	35	32	28	29
28	36	29	28	31	29	31	32	28	30	36	36	30	30	35	32	30	36	30	30
36	30	35	30	30	36	31	32	32	35	32	36	28	32	34	36	31	34	30	36
35	36	30	32	36	36	36	36	34	28	30	30	31	28	28	36	36	34	28	26
35	36	29	30	28	28	30	34	28	28	28	30	35	32	36	30	31	36	28	31
32	36	30	35	31	32	30	28	28	35	35	36	35	34	35	28	31	31	34	34
33	30	30	28	35	35	32	32	32	30	35	30	28	32	36	35	35	31	34	32
30	35	36	34	28	28	30	35	28	34	34	35	34	36	32	36	32	36	31	32
30	36	32	32	32	28	30	28	35	32	33	35	30	31	35	35	36	35	30	33
30	32	35	30	32	33	31	32	32	25	32	28	36	31	30	32	32	35	36	36
30	30	28	30	30	28	35	33	36	35	32	28	34	35	28	33	33	31	30	28
36	25	32	28	30	32	30	36	36	34	31	34	28	28	28	33	35	31	30	31
28	28	32	35	35	30	28	36	36	31	35	33	35	30	28	35	28	32	31	30
33	28	30	28	31	28	31	32	32	34	36	31	30	30	30	28	34	36	34	35
30	32	30	36	34	29	31	36	32	34	32	31	28	36	34	29	31	36	32	32
34	32	31	28	36	35	34	29	28	35	33	35	32	35	35	34	28	36	35	30
34	29	28	35	33	35	32	35	32	35	34	28	32	25	29	30	36	32	30	32
32	32	28	32	30	36	28	30	32	36	35	32	36	32	36	34	36	34	36	31

आधार सामग्री के विश्लेषण से प्राप्त आँकड़ों का विवेचन

शोध प्रतिदर्श द्वारा प्राप्त आधार सामग्री एवं उसके द्वारा प्रस्तुत आवृत्ति वितरणों का वर्णनात्मक सांख्यिकी का उपयोग करते हुए आँकड़ों का विश्लेषण करके केन्द्रीय प्रवृत्ति का मान ज्ञात किया गया है जो केन्द्रीय प्रवृत्ति की प्रमाप तालिका सं0–2 द्वारा प्रदर्शित है।

तालिका 2: केन्द्रीय प्रवृत्ति की प्रमाप (प्रशिक्षित)

मध्यमान	माध्यिका	बहुलक	प्रामाणिक विचलन
31.83	31.30	30.24	2.66

तालिका सं0–2 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित अध्यापकों की मानवीय मूल्य विषयक शोध प्रतिदर्श (छात्र 400) पर केन्द्रीय प्रवृत्ति के मान में, मध्यमान का मान 31.83 है। इसका तात्पर्य यह है कि प्रशिक्षित अध्यापकों के मानवीय मूल्य का औसत 31.83 है तथा माध्यिका का मान 31.30 है, जो इस बात का द्योतक है कि 50 प्रतिशत अध्यापकों के अंक इस प्राप्तांक से अधिक हैं तथा शेष 50 प्रतिशत अध्यापकों के अंक इस प्राप्तांक से कम हैं। तथा बहुलक का मान 30.24 है यह वह अंक है जिसको सर्वाधिक अध्यापकों ने प्राप्त किया है। प्रामाणिक विचलन का मान 2.66 है जो अंकों के फैलाव का द्योतक है। कर माध्यमिक स्तर के अप्रशिक्षित अध्यापकों के मानवीय मूल्य का अध्ययन–माध्यमिक स्तर के शोध प्रतिदर्श के अनुसार, 100 अप्रशिक्षित माध्यमिक शिक्षकों के मानवीय मूल्य विषयक आधार सामग्री को आवृत्ति वितरण तालिका सं0–3 के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है–

तालिका 3: अप्राशिक्षत अध्यापकों के मानवीय मूल्य का आवृत्ति वितरण

छात्र 100

12	24	20	16	20	24	18	20	16	20	17	12	21	16	12	15	17	18	18	17
13	14	12	21	17	13	17	16	14	18	13	12	18	12	12	17	12	14	21	15
13	13	12	12	18	21	17	16	16	17	12	14	16	20	20	17	24	21	20	12
15	20	20	12	24	14	19	16	12	15	16	19	17	13	16	12	19	17	17	12
15	15	13	18	15	21	12	12	21	21	14	16	20	18	14	21	14	19	12	21

आधार सामग्री के विश्लेषण से प्राप्त आँकड़ों का विवेचन

शोध प्रतिदर्श द्वारा प्राप्त आधार सामग्री एवं उसके द्वारा प्रस्तुत आवृत्ति वितरणों का वर्णनात्मक सांख्यिकी का उपयोग करते हुए आँकड़ों का विश्लेषण करके केन्द्रीय प्रवृत्ति का मान ज्ञात किया गया है, जो केन्द्रीय प्रवृत्ति की प्रमाप तालिका सं0–4 द्वारा आगे प्रदर्शित है।

तालिका 4: केन्द्रीय प्रवृत्ति की प्रमाप (अप्रशिक्षित)

मध्यमान	माध्यिका	बहुलक	प्रमाणिक विचलन
22.48	19.40	19.26	2.27

तालिका सं0–4 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के अप्रशिक्षित अध्यापकों के मानवीय मूल्य विषयक शोध प्रतिदर्श (छात्र 100) पर केन्द्रीय प्रवृत्ति का मान में मध्यमान का मान 22.48 है, इसका तात्पर्य यह है कि अप्रशिक्षित अध्यापकों के मानवीय मूल्य का औसत 22.48 है तथा माध्यिका का मान 19.40 है, जो इस बात को प्रदर्शित करता है कि 50 प्रतिशत अध्यापकों के अंक इस प्राप्तांक से अधिक है तथा शेष 50 प्रतिशत अध्यापकों के अंक इस प्राप्तांक से कम है। बहुलक का मान 19.26 है यह वह अंक है जिसको सबसे ज्यादा अध्यापकों ने प्राप्त किया है। प्रमाणिक विचलन का मान 2.27 है जो अंकों के फैलाव को दिखाता है।

माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित अध्यापकों के मानवीय मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका 5: प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित अध्यापकों के मानवीय मूल्य विषयक मध्यमान एवं प्रामाणिक विचलन का तुलनात्मक विवरण तथा टी–परीक्षण का मान

प्रशिक्षित अध्यापक		अप्रशिक्षित अध्यापक	
मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
31.83	2.66	22.48	2.77
टी–परीक्षण का मान = 35.96			

तालिका सं0–5 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित अध्यापकों के मानवीय मूल्य का मध्यमान 31.83 प्राप्त है तथा अप्रशिक्षित अध्यापकों के मानवीय मूल्य का मध्यमान 22.48 प्राप्त है। दोनों मध्यमानों के बीच व्याप्त अन्तर को ज्ञात करने के लिए किये गये टी–परीक्षण का मान 35.9 प्राप्त हुआ है। जो के 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 से अधिक है तथा के 0:01 विश्वसनीयता स्तर मान 2.58 से भी अधिक है। अतः इससे स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित अध्यापकों तथा अप्रशिक्षित अध्यापकों के मानवीय विश्वसनीयता मूल्य में 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर तथा 0.01 विश्वास स्तर पर भी सार्थक अन्तर प्राप्त है। इसी आधार पर उपपरिकल्पना – माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित अध्यापकों तथा अप्रशिक्षित अध्यापकों के मानवीय मूल्य में कोई सार्थक अन्तर–नहीं होता है, को अस्वीकृत किया जा सकता है तथा शोध उपपरिकल्पना को स्वीकृत किया जा सकता है। इससे हम यह कह सकते हैं कि माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित शिक्षक अप्रशिक्षित शिक्षकों से मानवीय मूल्य में श्रेष्ठ हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, सुमन (1991): "इफेक्टिवनेस ऑफ द एडवांस आर्गनाइजर मॉडल ऑफ आसूबेल इन डेवेलपिंग द टीचिंग कम्पीटेंस ऑफ स्टूडेंट टीचर्स एण्ड देयर एटीट्यूड टूवार्डस टीचिंग : एन एक्सपेरीमेंट", पी–एच0डी0, एजूकेशन, आगरा विश्वविद्यालय.
2. गुप्ता, अरुन, के0 एण्डः "वैल्यू इम्फैसिस एज प्रसीवड बाई प्यूपिल ऑफ प्राइमरी,
3. गंगल, रेनू (1989): मिडिल एण्ड हाईस्कूल स्टेजेस इन डिफेरेन्ट इंस्टीट्यूशन्स", इंडियन एजूकेशनल रिव्यू, वाल्यूम 24 (1) : 133–142
4. गंगोपाध्याय,तपन कांति (1991): "एन एक्सपेरिमेंटल स्टडी ऑफ द इफेक्टिवनेस ऑफ क्लासरूम टीचिंग टेक्नीक्स इन रिलेशन टू स्टूडेंट्स एचीवमेंट", पी–एच0डी0, एजूकेशन, कलकत्ता विश्वविद्यालय
5. जयमणि, पी0 (1991) : "इफेक्टिवनेस ऑफ द सिमुलेशन मॉडल ऑफ टीचिंग थ्रू कम्प्यूटर एसिस्टेड इंस्ट्रक्शन", एम0फिल0, एजूकेशन, अविनाशलिंगम् इंस्टीट्यूट फॉर होम साइंस एण्ड हायर एजूकेशन फॉर वोमेन

6. कपिल, एच0के0 (1986) : "सांख्यिकी के मूल तत्व" (सामाजिक विज्ञानों में) आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर

7. कपिल, एच0के0 (1986): रीडिंग इन रिसर्च मेथडोलॉजी", आगरा यू0जी0सी0 पब्लिकेशन, डिपार्टमेंट ऑफ साइकोलॉजी, आर0पी0एस0 कालेज, आगरा.

8. रेड्डी, आर0एस0 (1998) : डायरेक्ट्री एण्ड हैण्डबुक ऑफ टीचर्स एजूकेशन', नई दिल्ली, ए0पी0एच0पब्लिशिंग कारपोरेशन

9. राव,भास्कर डी0, जोसेफ,

10. राजू बी0 एण्ड

11. राव सुन्दरा जी0 (1989) : "साइंटिफिक एटीट्यूइस ऑफ इन–सर्विस एण्ड प्री–सर्विस साइंस टीचर्स", इंडियन एजूकेशनल रिव्यू, वाल्यूम–24 (2) : 37–44.

12. रामकृष्णैय्या, डी0 (1980) : "ए स्टडी ऑफ जॉब सेटिसफैक्शन, एटीट्यूड –टूवार्डस टीचिंग एण्ड जॉब इन्वाल्वमेंट ऑफ कालेज–टीचर्स", एम0फिल0 एजुकेशन, श्री वेंकटेश्वर–विश्वविद्यालय–

13. रेड्डी, भूम एन0 (1991) : "टीचिंग एप्टीट्यूड एण्ड एटीट्यूड्स ऑफ सेकेण्ड्री स्कूल टीचर्स इन आन्ध्र प्रदेश", पी–एच0डी0, एजूकेशन, उस्मानिया विश्वविद्यालय

14. रामचन्द्रन्, जी0 (1991) : "एन इनक्वायरी इन टू एटीट्यूड ऑफ स्टूडेंट–टीचर्स टूवार्ड्स टीचिंग", एम0फिल0 एजूकेशन मदुरै कामराज विश्वविद्यालय।

❖◆❖